

۱۰

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ حُسَّهُ وَ

और जानो कि जो कुछ भावे गनीमत हासिल किया तुमने, तो अल्लाहका पांचवा हिस्सा है और

لِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ

रसूलका, और उनके कराबत म-होंका और यतीमोंका, और भिरकीनोंका और मुसाफिरोंका।

إِن كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْقُرْآنِ

अगर मान गये हो अल्लाहको, और जो उतारा हमने अपने बन्दे पर छटाईके दिन,

يَوْمَ اتَّخَذَ الْجَمْعُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝۳۱ إِذْ أَنْتُمْ

जिस दिन दोनों इरीकमें जंगकी मुडभेड छूँ, और अल्लाह हर थाडे पर कादिर है (४१) जब कि तुम

بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبِ أَسْفَلَ

ईस तरफवाले किनारे पर, और वोड उस तरफ वाले किनारे पर हैं, और काङ्किला तुमसे नशेब

مِنْكُمْ ۖ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتِلَافِ فِي الْبَيْعِ وَلَكِنْ لِّيَقْضَىٰ

में. और अगर तुम लोग भुद वक्ते जंगको बदलते, तो आगे पीछे हो जाते वा'देके वक्त पर, लेकिन ताकि पूरा इरमा दे

اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ مَن هَلَكَ عَن بَيْتِنَا وَ

अल्लाह ईस कामको जो डोनडार था.. ताकि जो तबाह हो वोड दलीलसे तबाह हो, और

يَحْيَىٰ مَن حَيَّ عَن بَيْتِنَا ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝۳۲ إِذْ

जो जिन्दगी पाये वोड दलीलसे पाये. और बेशक अल्लाह ज़र सुननेवाला ईल्मवाला है (४२) जब कि

يُرِيكُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكُمْ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكُمْ كَثِيرًا لَّفَشَلْتُمْ

दिभा रडा है अल्लाह तुमको तुम्हारे भ्वाबमें उन्हे थोडा, और अगर तुमको दिभाया डोता उन्हे बडोत, तो ज़र दिलके छोटे

وَلَتَنَارَعَنَّ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ

तुम हो जाते, और ज़र मुआमलेमें जगडा डाल देते, लेकिन अल्लाहने मडकूळ रभा. बेशक वोड सीनोंमें छुपी बातों

الصُّدُورِ ۝۳۳ وَإِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ إِذْ اتَّقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَ

का जाननेवाला है (४३) और जबकि दिभा रडा है तुमको जिस वक्त तुम लोग भिड गये, उन्हे तुम्हारी आंभोंमें थोडा, और

يُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۖ وَإِلَىٰ

थोडा तुमको करता है उनकी आंभोंमें, ताकि पूरा इरमादे अल्लाह उस कामको जिसको डोना डी है. और

اللَّهُ تَرْجِعُ الْأُمُورَ ۗ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا الْقِيَتُمْ فَعَةً

अल्लाह हीकी तरफ़ उर काम लौटाये जाते हैं (४४) ऐ वोह जो ईमान ला युके ! जब बिस गये तुम इरीके मुकाबिलसे,

فَاتَّبِعُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۗ وَأَطِيعُوا اللَّهَ

तो इट जाओ, और अल्लाहका जिक्र बाडोत करो, कि तुम कामियाब हो जाओ (४५) और कडा मानो अल्लाहका

وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا ۗ

और उसके रसूलका, और बाहम जगडा न निकावा करो, कि छुट दिवे हो जाओगे, और जाती रहेगी तुम्हारी बंधी डवा.

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۗ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ

और सभ्रसे काम लेते रहो, बेशक अल्लाह सभ्र करनेवालोंके साथ डे (४६) और मत हो जाओ उनकी तरफ़ जो निकवे

دِيَارِهِمْ بَطْرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ

अपने धरोंसे ईतराते और लोगोंको डिभाते, और रोक रहे हैं अल्लाहकी राडसे.

وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۗ وَإِذْ زَيْنٌ لَّهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ

और अल्लाह उनके करतूत पर छाये डे (४७) और जब सजा दिया उनके डकमें शैतानने उनके कामोंको,

وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَالْمَا

और केड दिया कि आज कोई भी तुमसे जतनेवाला नहीं लोगोंमें, और मैं तुम्हारा जामिन डूं. फिर

تَرَأَيْتِ الْفِتْنَةَ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ

जब आमने सामने हो गये दोनों लश्कर, तो भागा अपने पीठ पीछे, और बोला कि मैं अलग डूं तुमसे, बेशक

إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۗ

मैं वोड डेभ रहा डूं जो तुम नहीं डेभते, बेशक मैं अल्लाहसे डरता डूं. और अल्लाह सभ्त अजाब इरमानेवाला डे (४८)

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ عَرَّهٗؤَلَاءِ

जब बका करें मुनाफिक लोग, और वोड जिनके दिलोंमें भीमारी डे, कि मगडर कर दिया डे उन मुसल्मानोंको

دِينَهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۗ وَلَوْ

उनके डीनने, और जो भरसा रहे अल्लाह पर, तो बेशक अल्लाह गलबेवाला डिकमतवाला डे (४९) और अगर तुम डेभो

تَرَىٰ إِذْ يَتَوَكَّلُ الَّذِينَ كَفَرُوا مَلَائِكَةَ يُضْرِبُونَ وُجُوهُهُمْ

जब भीआडे जिन्होंने ईनकी जिन्होंने कुड़ किया, पूरी करते हैं इरिशते, तमांये घूंसे लगाते हैं उनके मुंड

وَأَدْبَارَهُمْ وَذُقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝۵۰ ذَلِكُمْ بِمَا قَدَّمْتُمْ

और पीछे पर, कि और यमो अजाब आगका (५०) यह सजा है जो तुम्हारे छाथोंने

أَيَّدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝۵۱ كَذَّابٍ أَلِ فِرْعَوْنَ

पहले किया, और भेशक अल्लाह नहीं है जाविम, बन्दों पर (५१) जैसा ढंग था फिरऔनियोंका,

وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ

और जो उनसे पहले थे, कि ई-कार कर दिया अल्लाहकी आयतोंका, तो पकडा उनको अल्लाहने उनके गुनाहोंके बदले.

إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝۵۲ ذَلِكُمْ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ

भेशक अल्लाह कवी है सज्जत अजाब इरमानेवाला (५२) यह यूं कि भेशक अल्लाह नहीं बटला

مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۝۵۳ وَ

करता किसी ने'मतको, जो किसी कौमको ई-आम इरमा दिया, यहां तक कि वोड अपने आपको बटल दे. और

أَنَّ اللَّهَ سَبِيْعٌ عَلَيْهِمْ ۝۵۴ كَذَّابٍ أَلِ فِرْعَوْنَ ۝۵۵ وَالَّذِينَ مِن

भेशक अल्लाह सुननेवाला ई-मवाला है (५३) जैसे दस्तूर था फिरऔनियों और उनसे

قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَعْرَفْنَا

पहलोंका, जुटलाया अपने परवरदिगारकी आयतोंका, तो तबाह कर दिया हमने उनको उनके गुनाहोंकी सजामें, और डिओ दिया

أَلِ فِرْعَوْنَ ۝۵۶ وَكُلٌّ كَانُوا ظَالِمِينَ ۝۵۷ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ

फिरऔनियोंको. और सब ही अंधेरवाले थे (५४) भेशक भुरे जानवर अल्लाहके यहां हैं

اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝۵۸ الَّذِينَ عَاهَدتَّ

जिन्होंने ई-कार किया, तो फिर मानते ही नहीं (५५) जिन्हसे तुमने मुआहदा किया

مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْفُضُونَ عَاهَدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝۵۹

फिर वोड अहदशिकनी हर बार करते रहते हैं, और नहीं डरते (५६)

فَمَا تَتَّقُهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرَّدْتَهُمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ لَعَلَّهُمْ

पस अगर गिरइतार कर पाओ उनको लडाईमें, तो उनकी मारकाटसे लगा दो जो उनके पीछे हैं, कि शायद

يَذْكُرُونَ ۝۶۰ وَإِنَّمَا تَخَافَنَ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةٍ فَاِنذِرْهُم

उन्हें नसीहत दो (५७) और अगर डरो किसी कौमसे भयानत करनेको, तो इंक दो मुआहदा उनकी तरफ,

عَلَى سَوَاءٍ إِنْ أَرَادَ اللَّهُ لَا يُحِبُّ الْخَائِبِينَ ۝۵۸ وَلَا يَحْسَبَنَّ

भराभर भराभर. भेशक अल्लाह नही पसन्द करमाता दगाबाजोंको (५८) और ठस धमन्डमें न रहें

الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِيَّاهُمْ لَا يُعْزُونَ ۝۵۹ وَأَعِدُّوا لَهُمْ

वोह जो काकिर हुअे, कि भय कर निकल गअे. भेशक वोह थका न पाअेंगे गिरफ्तार करनेवालेको (५८) और तुम लोग ठन काकिरोंके

مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهَبُونَ بِهِ

दिये तैयार रहो जो कुछ तुमसे हो सके, जोरसे, और घोडा बांधनेसे, जिससे धाक बिठा रहे हो,

عَدُّوا لِلَّهِ وَعَدُّوكُمْ وَآخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمْ

अल्लाहके दुश्मन और अपने दुश्मन पर, और दूसरे और लोगों पर. जिन्हें तुम जानते नहीं.

اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفِّ

अल्लाह उनको जानता है. और जो कुछ भय करो अल्लाहकी राहमें, पूरा पूरा दिया जाअेगा

إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تظَلُمُونَ ۝۶۰ وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلَامِ فَاجْتَمِعْ لَهُا

तुम्हें, और तुम जुल्म न किये जाओगे (६०) और अगर वोह लोग सुलहकी भ्वादिश करें, तो तुम सुलहकी मन्जूर कर लो,

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝۶۱ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ

और अल्लाह पर भरोसा रभो. भेशक वोही सुननेवाला ठल्मवाला है (६१) और अगर चाहें कि धोका दें तुम

يَمْحَدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِنُصْرِهِ وَ

को, तो भिवाशुभल तुम्हारे लिये अल्लाह काकी है. वोही है जिसने ताईद करमाई तुम्हारी अपनी मददसे और

بِالْمُؤْمِنِينَ ۝۶۲ وَالْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ

ठमानवालोंसे (६२) और उल्लत डाल दी उनके दिलोंमें, और अगर भय कर डालते जो कुछ जमीनमें है

جَمِيعًا مَا آفَتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ آفَ بَيْنَهُمْ

सभ, तो भी उल्लत न पाते उनके दिलोंमें, लेकिन अल्लाहने उल्लत पैदा कर दी उनमें.

إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝۶۳ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ

भेशक वोह गल्बेवाला डिकमतवाला है (६३) औ आं डजरत ! “बिल्कुल काकी है तुम्हें अल्लाह और जो पीछे खले तुम्हारे

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝۶۴ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى

ठमानवाले” (६४) औ आं डजरत ! “उभारो अपने माननेवालोंको,

الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَبْرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتِينَ

જિહાદ પર,” अगर तुममें होंगे बीस सभ्र आजमा, तो जतेंगे दो सौको.

وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا

और अगर तुम सौ हूँ, तो जतोंगे अक हजार काइरोंको.

بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۗ أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَ

क्यूँकि वोह लोग बेकुछ समजे वउते हें (६५) अब हल्का कर दिया अल्लाहने तुमसे, और

عَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۗ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ

भुल गया कि तुममें कमजोरी है. तो अगर तुम्हारे अक सौ साबिर हों, तो जतें

يَغْلِبُوا مِائَتِينَ ۗ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفِينَ

गे दोसौको. और अगर होंगे तुम्हारे अक हजार, तो जतेंगे दो हजारको,

يَأْذِنُ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۗ مَا كَانَتْ لِنَبِيِّ أَنْ

अल्लाहके हुकमसे. और अल्लाह सभ्र करनेवालोंके साथ है (६६) यह किसी नबीसे न हुवा कि

يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ تُرِيدُونَ عَرَصَ

उसको हों कैदी लोग, यहाँ तक कि भूनरेजीकी धूम मया दे जमीनमें. तुम लोग याहते हो

الدُّنْيَا ۗ وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۗ لَوْلَا كُتِبَ

दुन्याकी पूँज. और अल्लाह पसन्द करमाता है आभिरतको. और अल्लाह गल्बेवाला हिकमतवाला है (६७) अगर अल्लाहका लिभा

مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۗ فَكُلُوا

आगे न आता, तो पहोंय जाता तुम लोगोंको जो तुमने लिया है एस सिक्सिसेमें भडा हुभ (६८) तो भाओ

مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۗ

जो मावे गनीमत तुमने पाया हलाव तय्यिभ. और अल्लाहको डरते रहो, भेशक अल्लाह गकूररहीम है (६८)

يَأْتِيهَا النَّبِيُّ قُلٌّ لِّسَنٍ فِي أَيِّدِكُمْ مِّنَ الْأَسْرَىٰ ۗ إِنْ يَعْلَمِ

औ आं हउरत ! तुम केह दो जो कैदी हें तुम्हारे हाथमें, कि अगर पा लिया

اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ

अल्लाहने तुम्हारे दिलोंमें नेक निच्यतीको, तो देगा तुमको बेहतर उससे जो लिया गया है तुमसे, और भप्श देगा

لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۵۰﴾ وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ

تुमको, और अल्लाह गफूररहीम है (७०) और अगर उन्होंने तुमसे दगाकी, तो

خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿۵۱﴾

पहले भी दगा कर चुके हैं अल्लाहसे, तो उसने गिरफ्तार करा दिया उन्हें. और अल्लाह धम्मवाला हिकमतवाला है (७१)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ وَأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ

बेशक जो ईमान लाये, और हिजरतकी, और जिहाद किया अपने मालो ज्ञानसे

فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ

अल्लाहकी राहमें, और जिन्होंने ठिकाना दिया, और मददकी, और वोह लोग अक दूसरे

أَوْلِيَاءُ بَعْضُهُمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَالَهُمْ مِنْ

के वारिष हैं. और जिन्होंने ईमान कभूला और हिजरत न की नहीं है तुम्हारा

وَلَا يَتَّبِعُهُمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّى يُهَاجِرُوا وَإِنْ اسْتَنْصَرْتُمْ

उनकी विरायतमें कुछ, यहां तक कि हिजरत करें. और अगर मदद मांगे तुमसे

فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَهُمْ

दीनके मुआमलेमें, तो तुम पर वाजिब है मदद करना, मगर न मुकाबला उस क्रौमके, कि तुम्हारे और उनके दरमियान

وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿۵۲﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

कोई मुआहदा है. और अल्लाह जो करो देखनेवाला है (७२) और जिन्होंने कुछ किया,

بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضُهُمْ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ

उनमें अक दूसरेके वारिष हैं. अगर तुमने यह न किया, तो होगा कितना जमीनमें,

وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿۵۳﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ فِي

और नया इसाद (७३) और जो ईमान लाये, और हिजरतकी, और जिहाद किया,

سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ

अल्लाहकी राहमें, और जिन्होंने ठिकाना दिया और मददकी, वोही माननेवाले हैं

حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿۵۴﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ

हक. उनके लिये बख्शिश है और धरुतकी रोजी है (७४) और जो ईमान लाये अब

بَعْدُ وَهَاجِرُوا وَجِهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَئِكَ مِنْكُمْ وَأُولُوا

पीछेसे और डिजरतकी, और जिहाद किया तुम्हारे साथ, तो वोह तुममेंसे हैं. और

الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ

रिश्तेवाले अक दूसरेसे ज्यादा करीबी हैं, अल्लाहकी किताबमें. भेशक

اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

अल्लाह सभ कुछका जाननेवाला है (७५)

۱۰
۹

سُورَةُ التَّوْبَةِ
۱۲۹

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ

سُورَةُ التَّوْبَةِ
۹ مَكِّيَّةٌ ۱۱۳

सूरअे तौबा मदनिय्या

आयात १२८ रुकूअ १६

بِرَاءَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ

दस्त भरदारी है अल्लाह और उसके रसूलकी, जिन अहद शिकन मुश्रिकनसे तुमने

الْمُشْرِكِينَ ۝ فَسَيَحْوَ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا

मुआहदा किया था (१) कि यल फिर लो जमीनमें यार महीने, और मा'लूम रहे

أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ فَخْرِي الْكَافِرِينَ ۝ وَ

कि तुम नहीं थका सकते अल्लाहको और भेशक अल्लाह काकिरोंको रुस्वा करमानेवाला है (२) और

أَذَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ

मुला अे'लान है अल्लाह और उसके रसूलका लोगों तक, उज्जे अकबरके दिन,

أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَرَسُولُهُ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُمْ

कि भेशक अल्लाह बेजार है मुश्रिकोंसे.. और उसका रसूल, तो अगर तुम लोगोंने तौबा करली, तो यही

خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۝ وَ

भला है तुम्हें. और अगर मुंह ईरे रहे तो जाने भुजे रहना, कि तुम न थका पाओगे अल्लाहको. और

بَشِيرِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِّنَ

भबर हे दो जिन्होंने ई-कार किया, हुभ देनेवाले अजाबका (३) मगर जिन मुश्रिकनसे तुमने

الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ

मुआहदा किया, फिर उन्होंने कुछ नहीं कमीकी, और न पड़े पर हाथ रभा, तुम्हारे मुकाबले पर

أَحَدًا فَأَتَبُوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

کिसیکے، تو پورا کرلو انکے معاہدےکو مہیاہ تک. بےشک اےللاہ پسند فرماتا ہے

الْمُتَّقِينَ ۝ فَإِذَا اسْلَخَ الْأَشْهُرَ الْحُرْمَ فَاقْتُلُوا الشُّرَكِيَّ

پرہیزگاروںکو (۸) قتل کر جب حرام مہینوں کے ختم ہونے کے بعد، تو کتلہ کر دو مشرکوںکو

حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُواهُمْ وَاحْصِرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ

جہاں تم انکو پا جاؤ، اور انہیں پکڑو، اور انہیں گھیر کر لو، اور بٹھ جاؤ انکے دیکھے

كُلَّ مَرْصِدٍ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ

ہر جگہ کی جگہ پر. اگر انہوں نے توبہ کر لی اور نماز کا اہم کرنے لگے، اور زکوٰۃ ادا کیا دیکھے،

فَقُلُوا سَبِيلَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ

تو چاہے تو انکی راہ. بےشک اےللاہ بخیر و رحمت ہے (۹) اور اگر کوئی

الشُّرَكِيَّ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ

مشرک پناہ مانگے تو پناہ دو، جہاں تک کہ وہ سنا لے کلام اللہ کو، پھر پہنچا دو

مَأْمَنَهُ ۗ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۖ كَيْفَ يَكُونُ لِلشُّرَكِيَّ

انکے پاس، یہ اس لیے کہ وہ لوگ نہیں جانتے ہیں (۱۰) کس طرح مشرکوں کو

عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ

کوئی معاہدہ اےللاہ اور انکے رسول کے ساتھ نہ ہو، مگر جن سے تم نے مسجد کے

الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

پاس رہتا ہے. تو جب تک وہ اس پر قائم رہیں، تو تم بھی ان کے دیکھے کا اہم رہو، بےشک اےللاہ پسند فرماتا ہے

الْمُتَّقِينَ ۖ كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلَّا

پرہیزگاروں کو (۱۱) کیسے اور اگر وہ تم پر ظاہر ہوں، تو تم ان کے دیکھے کو نہیں ڈرتے،

وَلَا ذِمَّةٌ يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ ۗ وَالْكَثْرَةُ

نہ کوئی معاہدہ. ہوش کر کے تمکو اپنی زبانوں سے، اور ان کے دل نہیں ماننے. اور ان میں اکثریت

فُسِقُونَ ۗ ۝ اسْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ تَسْتَأْذِنُوا فَمَا لَكُم مِّنْ أَعْيُنٍ

بے ایمان ہیں (۱۲) لے لیا اےللاہ کی آیتوں کے بغیر کہ تم نے ان کی آنکھوں سے، پھر روک پھینکی اےللاہ کی راہ سے.

إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۙ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَّلَا

بेशک उनکے پुरے کرتوت رહે (۷) परवाह न करें मो'मिनके डकमें किसी रिश्तेका और न

ذِمَّةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۙ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ

मुआहदेका, और वोही लोग सरकश हें (१०) फिर अगर उन्होंने तोबा कर ली और नमाज काठम करली,

وَأَتُوا الزَّكَاةَ فَآخَاؤَكُمْ فِي الدِّينِ ۙ وَتَفَصَّلَ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ

और जकात दिया किये, तो तुम्हारे भाई हें दीनमें, और हम तफसील इरमाते हें आयतोंकी उनके लिये

يَعْلَمُونَ ۙ وَإِنْ تَكَثُرَ آيَاتُهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا

जो ठल्म रभते हें (११) और अगर तोड डाला अपनी कस्मोंको अहद करनेके भा'द, और योट शुरअ करदी

فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا ۙ إِنَّ الْكُفْرَ إِتْمَهُمْ لَا آيَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ

तुम्हारे दीनमें, तो मार डालो कुङके सरगनोंकी. बेशक उनकी कोई कसम नहीं, कि अब

يَنْتَهُونَ ۙ إِلَّا تَقَاتِلُوا قَوْمًا تَكَثُرَ آيَاتُهُمْ وَهُمْ أِيَّاكُمْ

तो रुकें (१२) क्या न कत्व कर डालोगे उनको जिन्होंने अपनी कसमें तोड़ी, और साजिशकी

الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَأُ وَّكُمُ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۙ تَخْشَوْنَهُمُ قَالَهُ أَحْسَنُ

रसूलके निकावनेकी, और उन्होंने ठभिनदाकी तुमसे पडली बार. क्या तुम उन्हें डरते हो ? तो अल्लाह ज़्यादा डकदार है

أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۙ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ

कि उससे डरो, अगर उसके माननेवाले हो (१३) जिहाद करो उनसे, अजाब देगा उनको अल्लाह

بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْرِجُهُمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ

तुम्हारे हाथोंसे, और उन्हें रुस्वा करेगा. और तुम्हारी मदद इरमावेगा उन पर. और आराम देगा मुसल्मान कौम

مُؤْمِنِينَ ۙ وَيَذْهَبُ غِيظٌ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ

के सीनोंको (१४) और दूर कर देगा उनके दिलोंके गुस्सेको, और तोबा कबूल इरमा लेता है अल्लाह जिसकी

يَشَاءُ ۙ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ۙ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ

चाहे. और अल्लाह ठल्मवाला डिकमतवाला है (१५) क्या तुमने भयाव कर लिया कि छोड दिये जाओगे ? डालांकि

اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَ

अल्लाहने अभी मा'दूम नहीं कराया जिन्होंने तुममेंसे जिहाद किया. और नहीं बनाया अल्लाह व

لَا رَسُولَ لَهُ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَ لِيَجْزِيَ اللَّهُ خَيْرَ يَسَاءِ تَعْمَلُونَ ﴿۱۱﴾

(۱۱) رسول اور کویں میں مسلمانوں کو بخش کر، کوئی سزا نہ دے گا اور اللہ اللہ ہی بہتر ہے جو کرتے ہو (۱۱)

مَا كَانَ لِلشُّرِكِينَ أَنْ يَعْبُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى

مشرکوں کا کام نہیں ہے کہ مسجد اللہ کی، گواہی دے کر

أَنْفُسِهِمْ بِالْكَفْرِ أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي النَّارِ هُمْ

اپنے اوپر کھڑکی۔ ان لوگوں کا کیا پورا ادا نہیں ہوا اور ان کے اعمال ان کے لیے

خُلِدُوا وَ ﴿۱۲﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

ذمہ دار رہنے والے ہیں (۱۲) اللہ کی مسجد میں اللہ پر ایمان لائے اور اللہ پر اور اللہ کے

الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَحْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَى

آخر اور نماز قائم کی اور زکوٰۃ دی اور نہ ڈرا سوا اللہ کے، تو کربان ہے کہ

أُولَئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿۱۳﴾ أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ

وہ لوگوں کو گمراہوں میں سے نہ بنائے گا (۱۳) کیا تم نے حاجیوں کو پانی

وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَسَنَ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَ

پیشانی اور مسجد الحرام کو آباہ کرنا، اس شخص کی طرح، جو ایمان لایا اللہ پر اور اللہ کے

جُهْدًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي

اللہ کے لیے اللہ کے لیے نہیں ہیں (۱۴) اللہ کے لیے نہیں ہیں اور اللہ کے لیے نہیں

الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿۱۵﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجُهْدًا وَفِي

ظالموں کو (۱۵) جو ایمان لائے اور ہجرت کی اور اللہ کے لیے

سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْبَرُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ

اللہ کے لیے اللہ کے لیے ان کے مالوں اور ان کے جانوں سے ان کے لیے اللہ کے لیے

وَ أُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿۱۶﴾ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ

وہ لوگوں کو اللہ کے لیے ان کے لیے اللہ کے لیے ان کے لیے

رِضْوَانٍ وَجَدْتُمْ لَهُمْ فِيهَا نِعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿۱۷﴾ خُلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا

اللہ کے لیے ان کے لیے ان کے لیے ان کے لیے (۱۷) ان کے لیے ان کے لیے

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿۲۲﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا

بेशک اے لڑائی، اُسکے یخاں بجا اچھ ہے (۲۲) اے वो जो ईमान ला चुके ! न बनाओ

أَبَاءَكُمْ وَأَخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِن اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ط

अपने बापदादोंको और अपने भाईयोंको दोस्त, अगर उन्होंने पसन्द कर लिया कुछको ईमान पर.

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنكُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿۲۳﴾ قُلْ إِنَّ

और जो दोस्ती रभे उनकी तुममेंसे, तो वोही हैं अधेर करनेवाले (२३) केड सुना दो, कि अगर

كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَأَخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ

हैं तुम्हारे बापदादे और तुम्हारे भेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारे जोडे और तुम्हारा कुम्भा,

وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكِنٌ

और वोड माल जिसको कमा रभा है तुमने और दुकानदारी, कि उरा करते हो जिसकी कसाद बाजारीकी, और घर

تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ

जो तुम्हें पसन्द हैं, सब ज़्यादा प्यारे हैं तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राडमें जिहाद करनेसे,

فَتَرْبِّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ط وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ

तो इन्तिजार करो यखं तक, हे अल्लाह सजा. और अल्लाह राड नहीं देता

الْفَاسِقِينَ ﴿۲۴﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۗ وَيَوْمَ

नाइरमान कौमको (२४) बेशक ज़र मदे इरमाई तुम्हारी अल्लाहने बोडतेरी जगडोंमें, और डुनेन

حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ

के दिन, जबकि भुश कर दिया था तुमको तुम्हारी कपरतने, तो न बना सकी वोड कपरत तुम्हारे लिये कुछ, और तंग हो गई

عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمُ مُدْبِرِينَ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ أَنْزَلَ

तुम पर जमीन भावजूद अपनी वुस्अतके, इर पीठ दिभा कर इर गअे तुम (२५) इसके भा'द उतारा

اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا

अल्लाहने सुकूनको अपने रसूल पर और मुसल्मानों पर. और उतारा उन लशकरोको जिन

لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿۲۶﴾

को तुम लोगोंने नहीं देभा. और अजाब लेश कुछ करनेवालों पर. और यड सजा है काइरोकी (२६)

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَفُورٌ

फिर तौबा कबूल इरमावे अल्लाह ँसके बा'द जिसकी याडे. और अल्लाह गकूर

لَّحِيمٌ ﴿۲۷﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا

रखीम हे (२७) औ वोड जो ँमान वा युके ! मुश्रिकीन नरे नापाक हें, तो

يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ

नजदीक न आने पाअें मस्जिदे उरामके, ँस सालके बा'द. और अगर तुमहें डर हे

عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ

मोडताछुका, तो जइद धनी बना देगा तुमको अल्लाह अपने इज्जसे, ँशाअल्लाह. भेशक अल्लाह

عَلَيْكُمْ حَكِيمٌ ﴿۲۸﴾ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ

दाना डकीम हे (२८) कत्व कर दो जा न मानें अल्लाहको और पिछले दिन

الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ

को, और न उराम जानें जिसको उराम इरमा दिया अल्लाह और ँसके रसूलने, और न कबूल करें

دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ

दीने भरडकको, जिनको किताब ली दी गछ थी, यडां तक कि हें जजिया

عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَغُرُونَ ﴿۲۹﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ

अपने डायसे जलील डो कर (२९) और डींग ली यडूदने, कि उजैर अल्लाहके भेडे हें.

وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۗ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ

और जक मारा ँसाँयोंने, कि मसीह अल्लाहके भेडे हें. यह ँनकी जभानी गपें हें.

يُضَاهَهُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۗ قَتَلَهُمُ اللَّهُ ۗ أَلَمْ

बराबरी कर रहें हें बातमें ँनकी जो काकिर थे पडले. भुदा ँनको गारत करे ! कडां

يُؤْفَكُونَ ﴿۳۰﴾ اتَّخَذُوا أَحْبَابَهُمْ وَأَرْبَابًا مِنْ دُونِ

औंधाअे हें (३०) बना रभा हे अपने पादरियों और अपने पोपोंको अल्लाहको छोड कर

اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۗ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا

रभ, और मसीह ँभने मरयमको, और वोड मामूर नडी किये गअे, मगर यह कि पूजें मा'भूदकी जो अेक हे.

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿۳۱﴾ يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا

نہی ہے کوئی پوجنے کے کاہیل سوا اس کے، پاک ہے وہ جس سے جس کو شریک بناتے ہیں (۳۱) یا کہتے ہیں کہ بوجھ دے

نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ

اللہ کی نور اپنی منہ سے، اور اللہ کی نام نہ کرے، مگر یہ کہ پورا کر دیا ہے اپنا نور، جو بوجھ مانتے

الْكَافِرُونَ ﴿۳۲﴾ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ

کاہیر لوگ (۳۲) وہی ہے کہ بھجھ اپنے رسول کی ڈیڈاہت، اور دینہ ہر ڈک کے ساہ،

لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿۳۳﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

تاکہ گاہیلہ ہر ما دے اسے سارے دینوں پر، جو تیل مہیلا اٹھیں مشرک لوگ (۳۳) اے وہ

أَمْثَلُكُمْ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَابِ وَالرَّهْبَانِ لِيَاكُونَ أَمْوَالِ

جو ہمان لا بھکے ! ہشک ہوڈتہرے پادری اور جوجی، ہا جاتے ہیں لوگوں کے مال کو

النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ

ناہک، اور روکے اللہ کی راہ سے. اور جو لوگ

يَكْنُزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

ہکڈا کرے سونا اور یاڈی کو، اور نہ ہرخ کرے اسے اللہ کی راہ میں.

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿۳۴﴾ يَوْمَ يُخَيَّلُ عَلَيْهَا فِي نَارٍ جَهَنَّمَ

تو ہہر دے دیجیہ اٹھیں ڈھب دہنے والے اجاہ کی (۳۴) جس دین وہ سب تپا یا جہے گا جڈنن مکی آاگ میں،

فَتَشْكُوا بِهَا جِبَاهَهُمْ وَجُنُوبَهُمْ وَظُهُورَهُمْ هَذَا مَا كُنْتُمْ

ہیر داگ دیہے جہے اٹھیں پشانیاں، اور اٹھیں کر وڈے، اور اٹھیں پشہ. یہ ہے، کہ جس کو ہجانا

لَا أَنْفُسَكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿۳۵﴾ إِنَّ عَذَابَ الشُّهُورِ

ہنا یا ہا تہم نے اپنا، اہب یاہو جو ہکڈا کیا کرتے ہے (۳۵) ہشک مہیوں کا شہمار

عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

اللہ کے نہ ڈیک ہارڈ مہی نے ہیں کتاہے ہلاہی میں. جس دین سے پےڈا ہر ما یا ہا آاسمانوں کو

وَالْأَرْضِ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرْمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا

اور جہی ن کو، اٹھ میں سے یاہ ہوڈتہرہ ہیں. یہ ہے سہا کائنات. تو

تَظَلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَآفَّةً كَمَا

अंधेर न करो धन महीनोंमें अपने विपर, और ज़िंदाद करो मुश्रिकीनसे सब, जिस तरह

يُقَاتِلُونَكُمْ كَآفَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿۳۱﴾ إِنَّمَا النَّسِيءُ

वोह जंग करते हैं तुमसे सब. और जान लो कि अल्लाह अपने डरनेवालोंके साथ है (३६) महीनेको टालना,

زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُصَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَ

सिर्फ न माननेमें बढ़ जाना है, इससे गुमराह किया जाता है उनको जो काफ़िर हैं, कि हलाक करार दें अक बरस और

يُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُؤَاطُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحِلُّوا مَا حَرَّمَ

हराम जानें दूसरे बरस, ताकि बराबर कर दें चारकी गिनतीको जिन्हें हुर्मत दी अल्लाहने, कि हलाक कर लें जिसको हराम किया

اللَّهُ زَيْنٌ لَهُمْ سُوءٌ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿۳۲﴾

अल्लाहने. उन्हें अच्छी लगी अपनी बढ आ'मावी. और अल्लाह राह नहीं देता काफ़िर कौमको (३७)

يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ الْفَرُّ وَأَنِّي سَبِيلُ

ऐ वोह जो धिमान ला चुके ! तुम्हें क्या हुआ कि जब कहा गया तुमको कि चल पडो अल्लाहकी राहमें,

اللَّهُ إِنَّا قُلْنَا إِلَى الْأَرْضِ أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ

तो भोज बन कर जमीन पर गिर पडते हो. क्या तुम पसन्द करते हो दुन्यावी जिनदगीको

الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿۳۳﴾

आभिरतसे, तो दुन्यावी जिनदगीकी पूंज आभिरतमें मडज थोड़ीसी है (३८)

إِلَّا تَتُفَرُّوْا يُعَذِّبُكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۗ وَيَسْتَبْدِلُ قَوْمًا غَيْرَكُمْ

अगर तुम लोग कूय न करोगे, तो अजाब देगा तुमको दुबवावा अजाब.. और वे आयेगा तुम्हारे बदले दूसरी कौम

وَلَا تَصْرُوهُ شَيْئًا ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿۳۴﴾ إِلَّا تَنْصُرُوهُ

तुम्हारे सिवा, और न बिगाड पाओगे उसका कुछ. और अल्लाह हर याहे पर कादिर है (३९) अगर तुम लोग नबीकी मदद न

فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا

करोगे, तो भेशक उनकी मदद तो अल्लाहने की है, जबकि उनको निकालनेकी साजिश की थी जिन्होंने कुछ किया था, दो जान,

فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ

जबकि दोनों गारमें हैं, जब डेहते हैं अपने सहायीसे कि रंज न करना, यकीनन अल्लाह हमारे साथ है. तो उतार दिया

اللَّهُ سَكِينَتُهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ

अल्लाहने अपनी तसल्लीको उन पर, और मजबूत कर दिया उनको उन लश्करोंसे जिनको तुम लोगोंने नहीं देखा, और कर दिया

الَّذِينَ كَفَرُوا وَالسُّفٰلٰٓى وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ

काफ़िरोंके भोलकी नीचा. और अल्लाह हीका भोलबावा है. और अल्लाह गल्लेबावा

حَكِيمٌ ۝۴۰ اِنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ

हिकमतवाला है (४०) दूय करो ज्वाह उल्ले कुल्ले और ज्वाह लरे लरे, और जिहाद करो अपने मालो ज्ञानसे

فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝۴۱ لَوْ كَانَ

अल्लाहकी राहमें. यह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर भूजो (४१) अगर छोता

عَرَضًا قَرِيْبًا وَسَفَرًا قٰصِدًا اِلَّا تَبْعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعْدَتْ عَلَيْهِمْ

आसपासका माल और सफ़र मो'तदिल, तो वोह सब साथ छोते तुम्हारे. लेकिन दूर लगी उन-

الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ

दुश्वार मुसाफ़त, और लखोत जल्द कसम भाओगे अल्लाहकी, कि अगर हमसकत रहते तो जरूर निकले छोते तुम्हारे साथ. वोह तबाह कर रहे हैं

اَنْفُسَهُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝۴۲ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۗ لِمَ

अपने आपकी. और अल्लाह जानता है कि वोह यकीनन जूटे हैं (४२) अल्लाह मुआफ़ करे, तुमने

اٰذَنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَّبِعِنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمُ الْكٰذِبِيْنَ ۝۴۳

क्यूं छुड़ी दे दी उन-के, कि आभिर भुल जाते सख्ये, और पड़यान लेते जूटोंको (४३)

لَا يَسْتَاذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُجَاهِدُوْا

छुड़ी तुमसे न लेंगे जो मानते हैं अल्लाहको और पिछले दिनको, अपने मालो ज्ञानसे

بِأَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاللّٰهُ عَلَيْهِم بِالْمُتَّقِيْنَ ۝۴۴ اِنَّمَا يَسْتَاذِنُكَ

जिहाद करनेसे, और अल्लाह जानता है अपने दरनेवालोंको (४४) छुड़ी वोही मांगते हैं

الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَرْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ

जो न अल्लाहको मानें, न कयामतको मानें, शकमें पडे हैं उनके दिल.

فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝۴۵ وَلَوْ اَرَادُوْا الْخُرُوْجَ لَاعْتَدُوْا لَهُ

तो वोह अपने शकमें छियकोले लेते हैं (४५) और अगर जाना चाहते तो उसका सामान करने,

عُدَّةٌ وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ ابْتِغَاءَهُمْ فَتَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ

लेकिन अल्लाह हीको उनका उठना मन्जूर न था, तो उन्हें अहदी कर दिया, और केह दिया गया कि मा'जूरीसे बैठनेवालोंके

الْقُعْدِيِّينَ ﴿۳۹﴾ لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَا أُضْعَفُوا

साथ तुम भी बैठ रहो (४६) वोह लोग अगर निकले तुममें, तो न बढ़ाते तुममें सिवा नुकसानके, और ज़रूर गये उडाते

خَلْلَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ۗ وَفِيكُمْ سَاعُونَ لَهُمْ ۗ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ

तुममें, चाहते कि तुममें कित्ता पड़ जाये. और तुममें उनकी बात सुननेवाले हैं. और अल्लाह दाना है

بِالظَّالِمِينَ ﴿۴۰﴾ لَقَدْ ابْتَغَوْا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ

उन जालिमोंका (४७) बेशक उन्होंने कित्ता मयाना चाहा पहले, और उल्टा किये तुम्हारे

الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿۴۱﴾ وَ

कामोंको, यहां तक कि उक आया और अल्लाहकी मरजी अखिर हो गयी, और वोह नाक भों चढ़ाये हैं (४८) और

مِنْهُمْ مَن يَقُولُ أئِذْنَ لِي وَلَا تَفْتِنِي ۗ ط الْآلِ فِي الْفِتْنَةِ

उनके भा'ज केहते हैं कि मुझे छुट्टी दीजिये, और कित्नेमें न डालिये. जबरदार ! वोह लोग भुट कित्नेमें गिर

سَقَطُوا ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَسَاحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿۴۲﴾ إِنْ تُصِيبَكَ

पड़े. और बेशक जहन्नम काकिरों पर घेरा डाले है (४९) अगर पहोंचे तुमको

حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا

भेरियत, तो उन्हें बुरा लगे. और अगर पहोंचे मुसीबत, तो कहें कि बेशक हमने बना लिया था

أَمْرًا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ﴿۴۳﴾ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا

अपना मुआमला पहले हीसे. और मुंड केरे बडे भुश (५०) केह दो, कि “हरगिज न पहोंयेगा हमें,

إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا ۗ هُوَ مَوْلَانَا ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

मगर जो लिख दिया अल्लाहने हमारे लिये. वोह हमारा मौला है.” और अल्लाह ही पर तो मुसल्मानोंका

الْمُؤْمِنُونَ ﴿۴४﴾ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا أَحَدًا يَ الْحَسَنِيِّينَ ط

भरोसा है (५१) केह दो कि हमारे लिये क्या इन्तेजार करते हो अजुज दो लवाइयोंमें अक.

وَمَنْ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهِ

और हम तुम्हारा इन्तेजार करते हैं उसका, कि मुसीबतमें डाल दे तुम्हें अल्लाह, अजाब भेज कर अपने पाससे

أَوْ بِأَيْدِيَنَا فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ﴿۵۲﴾ قُلْ أَنْفِقُوا

या हमारे हाथोंसे, तो तुम इन्तज़ार करते रहो, हम भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं (५२) कैसेवा कर दो कि तुम लोग

طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ إِن كُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا

भर्य करो भुशीसे या दबावसे, तुम लोगोंसे कबूल न किया जायेगा. भेशक तुम नाइरमान लोग

فَسَقِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ

थे (५३) और नहीं है कोई रुकावट उनकी कि कबूल कर दिया जाये उनका भर्य करना, मगर यह कि उन्होंने

كَفَرُوا وَإِلَّا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ

कुड़ किया अल्लाह और रसूलके साथ, और नहीं आते नमाज़को मगर बेजुके, और न

وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿۵۴﴾ فَلَا تُحِبُّكَ أَمْوَالُهُمْ وَ

भर्य करें मगर दबावमें पस कर (५४) तो तअजुबमें न डालें तुमको उनके माल, न

لَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ

औलाद. अल्लाह यही चाहता है कि अजाब दे उन चीजोंसे दुन्यावी जिन्दगीमें,

الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿۵۵﴾ وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ

और उनका दम निकले जबकि वोह काफिर ही हों (५५) और कसमें भाते हैं अल्लाहकी

إِنَّهُمْ لَكَايِمٌ وَمَا هُمْ بِمِنكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿۵۶﴾ لَوْ

कि वोह तुममेंसे अरर हैं. हावांकि वोह तुममेंसे नहीं. हां वोह तुमसे डरते हैं (५६) अगर

يَجِدُونَ مَلْجَأًا أَوْ مَغْرِبًا أَوْ مَدَّخَلًا لَّوَكُلُوا إِلَيْهِ وَهُمْ

पा जायें कोई पनाहगाह, या सुरंग, या सूराभ, तो उधर जुक पडते, दौडते

يَجَسَّحُونَ ﴿۵۷﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْتَمِسُ فِي الصَّدَقَاتِ ۚ قَاتِ

डूये (५७) और उनमें कोई है, कि नुकताचीनी करता है तुम पर सदकतमें, युनाच्ये

أَعْطُوا مِنْهَا رِضْوَانًا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْتَخْطُونَ ﴿۵۸﴾

अगर उनको दिया गया तो भुश हो गये, और अगर नहीं दिया गया तो पका हैं (५८)

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ

काश वोह भुश हो जाते जो दे दिया था उनको अल्लाह और उसके रसूलने. और केहते कि काफ़ी है हमें अल्लाह,

فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَغْفِرُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَخْتَارُونَ ﴿۳۷﴾

के दिलमें है. केह दो कि उडाओ ढहा, भेशक अल्लाह सामने लानेवाला है वोह जिसको डरा करते हैं (६४)

وَلَيْنِ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلِ

और अगर उनसे जवाब तलब करो, तो जरूर कहेंगे, “कि हम तो बस गप लडाते और खेल रहे थे.” हुकम दे दो

أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿۳۸﴾ لَا تَعْتَذِرُوا

“कि क्या अल्लाहसे और उसकी आयतोंसे और उसके रसूलसे ढहा कर रहे थे ? (६५) बात न बनाओ

قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ إِنَّ نَعْفَ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ

भेशक तुम काफिर हो गओ मुसलमान होनेके बाद.” अगर हम मुआफी दें तुममेंसे कुछको

نُعَذِّبُ طَآئِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿۳۹﴾ السُّفْقُونَ وَ

तो अजाब भी देंगे बादको, क्यूंकि वोह अस्ल मुजरिम थे (६६) मुनाफिक मर्द व

السُّفْقَاتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَ

औरत सभ अेक दूसरेसे हैं.... हुकम दें बुराईका, और

يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ ۗ نَسُوا اللَّهَ

रोकें नेकीसे, और बन्द रखें अपनी मुडी. वोह सभ भूल गओ अल्लाहको,

فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿۴۰﴾ وَعَدَّ اللَّهُ

तो अल्लाह बेपरवाह हो गया उनसे. भेशक मुनाफिक लोग नाफरमान हैं (६७) वा’दा फरमा लिया अल्लाहने

الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكُفَّارَنَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا

मुनाफिक मर्द व औरत और काफिरोंसे जहन्नमकी आगका, हमेशा रहा करें उसमें.

هِيَ حَسْبُهُمْ ۗ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿۴۱﴾ كَالَّذِينَ

वोह उन्हें काडी है. और किटकार दिया उनको अल्लाहने. और उनके लिये दारुभी अजाब है (६८) जिस तरह वोह, जो तुम लोगों

مِّن قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَآكْثَرَ أَمْوَالًا وَ

से पहले थे, तुमसे ज्यादा जोरदार थे, और ज्यादा मालदार, और

أَوْلَادًا ۗ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلْقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلْقِكُمْ

ओलाहवाले, तो वोह रहे सहे अपनी तकदीरके मुवाफिक, फिर तुम रहने सडने लगे अपनी तकदीरके मुवाफिक.

كَمَا اسْتَنْتَعْتُمُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِمَخْلَاقِهِمْ وَخُصَّتُمْ

जिस तरह रहन सहनकी थी तुमसे पहलेओंने अपनी तकदीर (भर, और तुमने गपें उडाई जिस तरह वोड गप मार

كَالَّذِي خَاصُّوا بِأَوْلِيَّكَ حَيْثُ أَعْمَلْتُمْ فِي الدُّنْيَا

युके. वोड हें कि अकारत डो गअे उनके अमल दुनया

وَالْآخِرَةِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿۹۹﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ

व आभिरतमें. और वोडी हें दिवाल्या मारे (हल) क्या नहीं आई उन तक भबर उनकी

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمٌ نُوحٍ وَعَادٌ وَشُعُوبَةٌ وَقَوْمُ

जो उनसे पहले थे, कौमे नूड व आद व धमूड.. व कौमे

إِبْرٰهِيْمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

ईब्राहीम व अडले मदन, और तडोभालाकी गई भस्तियां. उनके यडां उनके

بِالْبَيِّنَاتِ ۗ فَمَا كَانَ اللهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوا

रसूल ले कर आअे रौशन दलीलें, तो अड्लाड नहीं हें कि उन पर जुल्म करे, लेकिन वोड

أَنْفُسَهُمْ يُظْلِمُونَ ﴿۱۰۰﴾ وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ

भुड अपने ठीपर जुल्म करते थे (१००) और सारे मुसल्मान भई औरत अेक दूसरेके

أَوْلِيَاءُ بَعْضٌ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

दोस्त हें.... हुकम हें नेकीका और रोकें बुराईसे, और काईम

وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللهَ

रभें नमाजकी, और हें जकात, और कडा मारें अड्लाडका

وَرَسُولَهُ ۗ أُولَٰئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللهُ ۗ إِنَّ اللهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۱۰१﴾

और उसके रसूलका. वोड हें कि भडोत जल्द रहमत इरमाअेगा उन पर अड्लाड, भेशक अड्लाड गालिभ हें डकीम हें (१०१)

وَعَدَ اللهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ

वा'दा इरमा लिया अड्लाडने मुसल्मान भई व औरतसे जन्नतोंका, कि भेडती हें जिन

تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٍ كَاطِبَةٍ فِي جَنَّتِ

के नीचे नडरें, डमेशा रहें उसमें, और पाकीजा घरका, रहनेके भागों

عَدْنٍ ۖ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿۴۲﴾

में. और अल्लाहकी रज़ामन्दी सबसे बड़ी है. यही बड़ी कामियाबी है (७२)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ

अै आं डउरत ! जिहाद करो काफ़िरोसे और मुनाफ़िकोंसे, और सप्टी भरतो उन पर.

وَمَا أُولَئِهِمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿۴۳﴾ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ

और उनका ठिकाना जहन्नम है. और बुरी जगड है (७३) कसम भाते हैं अल्लाहकी, कि कुछ भिलाइ

مَا قَالُوا ۖ وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ

भात नहीं कही, डालाकि उर्रर बक दिया है कुक़ी बोली, और काफ़िर डो गअे ठस्लाम लानेके भा'द,

وَهُمْ بِسَالَمٍ يَنَالُونَ ۚ وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ

और कस्ट किया उसका जिसको पाया नहीं. और नहीं बुरा लगा उनको मगर यही, कि धनी बना दिया उनको अल्लाहने,

وَرَسُولُهُ ۚ مِنْ فَضْلِهِ ۚ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ

और अल्लाहके रसूलने, अपने इज़लसे. तो अगर तौबा कर डालें तो उनका भला डोगा.

وَإِنْ يَتُوبُوا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ فِي الدُّنْيَا وَ

और अगर मुंड डेरें, तो अज़ाब डरमाअेगा उन पर अल्लाह, दुभवाला अज़ाब. दुन्या व

الْآخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ قَرِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿۴۴﴾ وَ

आभिरतमें. और नहीं डोगा उनका सारी ज़मीनमें कोठ यावर व मददगार (७४) और

مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ

उनके भा'जने मन्त मानी थी, कि अगर दिया डमको अल्लाहने अपने इज़लसे, तो डम उर्रर भैरात करें

وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰحِيْنِ ﴿۴۵﴾ فَلَمَّا اٰتٰهُمْ مِنْ فَضْلِهِ

गे, और डो ज़अेगे वियाकत मन्त (७५) तो जब अल्लाहने उनको दिया अपने इज़लसे

بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلّٰوْا وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۶﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا

तो कन्जूसी उसमेंकी, और डिर गअे मुंड डेरें (७६) तो उसके पीछे अल्लाहने निकाड डाल दिया

فِي قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَا اٰخَلَفُوْا اللّٰهَ مَا

डङ्गाके ठिलोंमें, उस डिन तक कि उससे मिलेंगे. क्यूंकि उनडोंने अल्लाहसे भिलाइ किया, जे उस

وَعَدْوُهُ وَبِسَاكَاتِهِمْ يَكْفُرُونَ ۝۷۹ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

से मन्त कर चुके थे, और इस लिये कि वो जूट बोलते थे (७७) क्या उन्होंने न जाना, कि बेशक अल्लाह

يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝۸۰ الَّذِينَ

जाने उनके बेदको, और उनकी सरगोशीकी, और बेशक अल्लाह सारे गैबका भडा जाननेवाला है (७८) जो लोग

يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ

फन्ती उडाते हैं इरमांभरदार ईमानवालोंकी भेरात करनेमें, और

الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ

उनकी जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत मजदूरी भर, तो उनसे मस्भरापन करते हैं. अल्लाह समझे

اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝۸۱ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا

उनके मस्भरापनको. और उनके लिये दुभववाला अजाब है (७९) उनकी नजातके लिये तुम शफायत करो या

تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ

न करो. अगर सत्तर भरतभा करोगे तो भी

يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ

अल्लाह न भाशेगा उनको. यह इस लिये कि उन्होंने कुङ किया अल्लाह और उसके रसूलसे.

وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝۸۲ قَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ

और अल्लाह राड नहीं देता सरकश कौमको (८०) पुश डो गअे जो पीछे

بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا

भेठे रड गअे, रसूलुल्लाहके जानेके भा'द, और नागवार जाना उसकी कि जिडाद करें

بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا

अपने मावो जानसे अल्लाहकी राडमें, और बकने लगे, "कि गरमीमें

فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝۸۳

क्यू न करो." केड दो, कि "जडन्मकी आग जूयादा गरम है," अगर समजें (८१)

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا ۚ جَزَاءُ بِمَا

तो डंसें कम और रोअें जूयादा. सजा है जो

كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿۸۲﴾ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ

वोड कमा युके थे (८२) फिर अगर वापसी करमा दी तुम्हारी अल्लाहने उनमेंसे किसी टोलीकी तरफ,

فَأَسْتَأْذِنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَ

फिर उन्होंने छज्जत मांगी तुमसे जिहादके लिये निकलनेकी, तो जवाब देना कि मत निकलो मेरे साथ कभी, और

لَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ

मत जंग करो मेरे उमराड किसी दुश्मनसे. तुम पसन्द कर युके बैठे रहनेकी पहली मरतबा,

مَرَّةٍ فَأَقْعُدُوا مَعَ الْخُلَفَاءِ ﴿۸۳﴾ وَلَا تَصِلْ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُمْ

तो अब बैठे रहा करो मजबूरोके साथ (८३) और नमाळे जनाजा, उनमेंसे कोर

مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ

मर जाओ, तो कभी न पढना, और न उनकी कब्र पर भडे होना. बेशक उन्होंने कुफ्र किया अल्लाहसे और उसके रसूलसे,

وَمَا تُوَاوَهُمْ فَسِقُونَ ﴿۸۴﴾ وَلَا تَعْجَبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ

और मेरे नाकरमान (८४) और तुमको उनके माल व औलाद पर तअज्जुब न हो.

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِمَا فِي الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ

अल्लाह यही चाहता है कि अजाबमें डावे उससे उन्हें दुन्यामें, और उनका

أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿۸۵﴾ وَإِذَا أَنْزَلْتَ سُورَةَ أَنِ آمَنُوا

दम निकले और वोड काफिर हों (८५) और उतारी गर जब कोर सूरत, कि मान जाओ

بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذِنَكَ أُولُو الطَّلُوفِ مِنْهُمْ

अल्लाहको और जिहाद करो उसके रसूलके उमराड, तो छुट्टी मांगने लगे उनमेंसे मुकदरवाले,

وَقَالُوا ذَرْنَا لَكُمْ مَعَ الْقَعْدِيِّينَ ﴿۸۶﴾ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ

और बोले कि उमको छोड दीजिये मजबूरोके साथ (८६) उनकी भुशी है कि पसमान्दा

الْخَوَافِ وَطَبَعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿۸۷﴾ لَكِن

औरतोंके साथ हों, और मोडर कर दी गर है उनके दिलों पर, तो वोड समजते ही नहीं (८७) लेकिन

الرَّسُولِ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ

रसूल और उनके साथी सारे मुसल्मानोंने जिहाद किया, अपने मालो जानसे.

وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿۸۸﴾

اور انہی کے لیے بہت سے نیک کامیابیوں ہیں۔ اور انہی کے لیے نیک کامیابی ہے (۸۸) اور

اللَّهُ لَهُمُ جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

اور ان کے لیے جنت ہے جس کے نیچے نہریں بہتی ہیں، جن میں وہ رہیں گے۔

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿۸۹﴾

یہی بڑی کامیابی ہے (۸۹) اور آج سے بات بنانے والے دیکھتی،

لِيُؤَدَّنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ

ان کے لیے اور ان کے لیے جو اللہ اور اس کے رسول کو جھوٹا سمجھتے ہیں،

الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۹۰﴾

ان کے لیے عذاب ہے (۹۰) اور ان کے لیے

وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ

اور نہ بیماروں پر، اور نہ ان پر، جو نہ پائے وہ جس کو خرچ کریں،

حَرْجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ

کوئی تکلیف، جبکہ وہ اللہ اور اس کے رسول کے لیے نصیحت کریں۔

سَبِيلٍ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿۹۱﴾

اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۹۱) اور نہ ان کے لیے

لِتَحِبَّهُمْ قُلْتُ لَا أَجِدُ مَا أَحْبَبْتُكُمْ عَلَيْهِ تَوَكَّلُوا وَأَعِينُوا

کہ انہیں سہارا دیجیے، تم نے جواہر دیا تھا "کہ میرے پاس سہارا نہیں"۔ وہ لوگوں اور ان کی

تَفِيضٌ مِنَ الدَّامَةِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يَنْفِقُونَ ﴿۹۲﴾

بہشتی ہیں ان سے، گمراہی اس پر، کہ انہی کے لیے جو خرچ کریں (۹۲) پکڑ کی راہ

عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا

ان پر ہے، جو ان سے اور خود مالدار ہیں۔ وہ خوش ہیں کہ ان کے

مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۹۳﴾

پہنچنے والی اور ان کے ساتھ۔ اور ان کے لیے ان کے دلوں پر، تو وہ جانتے ہی نہیں (۹۳)